REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

"हरियाणा प्रदेश में विभिन्न दलों के साथ भारतीय जनता पार्टी द्वारा किए गए चुनावी गठबन्धन"

सोनिका
शोधार्थी , राजनीतिक विज्ञान शास्त्र, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक.

शोध सार

हरियाणा प्रदेश की स्थापना के पश्चात् प्रदेश में राजनीतिक गतिविधियों ने भी समय दर समय नए आयाम हासिल किए। वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के पश्चात् प्रदेश की राजनीति में भाजपा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्ष 2014 में भारतीय जनता पार्टी ने पूर्ण बहुमत से सरकार बनाई लेकिन इससे पूर्व कई विधान सभा चुनाव हुए जिनमें भारतीय जनता पार्टी ने अन्य दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़े और उनके साथ गठबंधन में सरकार बनाई और प्रदेश की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय जनता पार्टी के उन अन्य दलों के साथ गठबन्धन का अध्ययन किया जाएगा।

मुख्य शब्द : चुनाव, राजनीति, गठबन्धन, विधानसभा, राजनीतिक दल आदि।

उद्देश्य : प्रदेश की राजनीति में भाजपा का अन्य दलों के साथ गठबन्धन स्थापित कर सरकार गठन में योगदान का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीक आंकड़ों का प्रयोग किया है इसमें साक्षात्कार, समाचार–पत्र, पुस्तकें और इटरनेट आदि का प्रयोग किया है।

भूमिका

गठबन्धन सरकार का अर्थ है किसी भी एक संसदीय प्रणाली में पार्टियों या दलों के गठबंधन से बनी एक सरकार। कैंब्रिज शब्दकोश के अनुसार "एक सीमित समय और किसी विशेष प्रयोजन के लिए विभिन्न राजनीतिक पार्टियों या समूहों के मिलन को गठबन्धन कहा जाता है।"[1]

हरियाणा के इतिहास में गठबंधन या समझौतावादी राजनीति का इतिहास काफी विस्तृत है और वर्तमान में भी यह राजनीति पर पूरी तरह हावी है। गठबन्धन या समझौतावादी सरकार की स्थापना प्रथम बार हरियाणा राज्य में हुई थी। इस का श्रेय हरियाणा राज्य के पूर्व उप–मुख्यमंत्री डॉ० मंगल सेन को जाता है। उन्होंने यह समझौता या गठबन्धन सर्वप्रथम चौ० देवी लाल की पार्टी लोकदल के साथ हरियाणा में नवनिर्मित भारतीय जनता पार्टी का विस्तार करने के लिए किया था। हालांकि उस समय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने ऐसी समझौतावादी सरकार बनाने पर डॉ० मंगलसेन का विरोध भी किया था। लेकिन आगे चलकर अनेक दलों ने इस नीति को अपनाया। हरियाणा की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ने समय–समय पर सत्ता प्राप्ति के लिए

अनेक दलों के साथ गठबन्धन किया है तथा इसी प्रकार के गठबन्धनों से भाजपा हरियाणा में सरकार बनाने में शामिल हुई। सर्वप्रथम भारतीय जनता पार्टी ने लोकदल के साथ गठबन्धन किया। इसके पश्चात् भारतीय जनता पार्टी और हरियाणा विकास पार्टी के बीच राजनीतिक गठबन्धन हुआ।

इसके पश्चात् भारतीय जनता पार्टी और इण्डियन नेशनल लोकदल के बीच गठबन्धन हुआ लेकिन यह गठबन्धन ज्यादा दिनों तक नहीं टिक पाया। इस गठबन्धन की समाप्ति के पश्चात् भारतीय जनता पार्टी और हरियाणा जनहित काँग्रेस के मध्य समझौता हुआ, लेकिन वर्ष 2014 के हरियाणा विधानसभा चुनाव से पूर्व भारतीय जनता पार्टी ने हजकाँ से गठबन्धन समाप्त कर दिया और अकेले अपने दम पर भारतीय जनता पार्टी ने 2014 विधानसभा का चुनाव लड़ा और विजय प्राप्त की।

1982 के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी का अन्य दलों के साथ गठबन्धन

1982 का विधानसभा चुनाव भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के पश्चात् हरियाणा प्रदेश का पहला विधानसभा चुनाव था।

इस चुनाव से पूर्व काँग्रेस पार्टी बहुत ही मजबूत स्थिति में थी, यद्यपि वह भी अपने अन्दरूनी खेमों से जूझ रही थी। काँग्रेस के मजबूत आधार को जबरदस्त टक्कर देने के इरादे से हरियाणा में मौजूदा महत्वपूर्ण क्षेत्रीय दल लोकदल और भारतीय जनता पार्टी में गठबन्धन हो गया। इसके अतिरिक्त लोकदल का मानना था कि देश अनेक चुनौतियों से जूझ रहा था इसलिए लोकदल ने जनता के सामने एक व्यावहारिक और विश्वसनीय विकल्प उपलब्ध किया। इसी प्रकार भारतीय जनता पार्टी ने भी लोकतंत्र और सामाजिक आर्थिक बदलाव के लिए विपक्ष से लड़ने के लिए गठबन्धन में सहमति जताई। भाजपा गठबन्धन में जनता पार्टी को शामिल करने के पक्ष में थी लेकिन सीटों के बँटवारे पर सहमति नहीं बन पाने के कारण उसने हरियाणा की बड़ी ताकत लोकदल पर ही मोहर लगाई। शुरुआती समय में लोकदल भारतीय जनता पार्टी को 10 से 15 सीटें देना चाहता था ताकि अगर अन्य दल गठबन्धन में आए तो उनको भी कुछ सीटें दी जा सकें। लेकिन अंततः लोकदल और भाजपा को विश्वास हो गया कि वे इन छोटी पार्टियों के समर्थन के बिना भी अच्छा कर सकते थे क्योंकि इन अन्य पार्टियों से उनके मतदाता प्रभावित नहीं हो रहे थे। ये छोटे दल अन्य दलों के मतों का विभाजन कर रहे थे।[2]

सन् 1982 के हरियाणा विधानसभा चुनाव 19 मई 1982 को सम्पन्न हुए। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी का गठबन्धन देवीलाल और चौ० चरण सिंह की पार्टी लोकदल के साथ था। इस चुनाव में दोनों दलों के उम्मीदवार टिकटों के बँटवारे से संतुष्ट नहीं थे। इसलिए दोनों दलों के मजबूत उम्मीदवारों ने गठबन्धन के द्वारा विधानसभा चुनाव में उतारे गए उम्मीदवारों का सच्चे दिल से समर्थन नहीं किया। उदाहरण के लिए कैथल में गठबन्धन का उम्मीदवार भारतीय जनता पार्टी की ओर से उतारा गया, लेकिन लोकदल के जिलाध्यक्ष ने स्वतन्त्र उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा। दूसरी तरफ थानेसर विधानसभा क्षेत्र में गठबन्धान का विधानसभा उम्मीदवार लोकदल की ओर से तय किया गया लेकिन भाजपा के समर्थक ने उनके विरुद्ध अपना नामांकन स्वतन्त्र उम्मीदवार के रूप में कराया एवं अन्त तक चुनाव में डटे रहे। इन घटनाओं के अतिरिक्त लोकदल भी दो खेमों में बँटा हुआ था। एक खेमा चौ० चरण सिंह के पक्ष में व दूसरा खेमा चौ० देवीलाल के पक्ष में मजबूती से खड़ा था। थानेसर विधानसभा क्षेत्र में गठबन्धन के द्वारा तय किए गए उम्मीदवार के विरोध में स्वतन्त्र उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ने वाला लोकदल जिलाध्यक्ष मूल रूप से चौ० चरण सिंह के खेमे से संबंधित था। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि गठबन्धन उम्मीदवार के विरोध में लोकदल उम्मीदवार भी था। लेकिन यह पूरी तरह सत्य नहीं है क्योंकि उसे लोकदल के केवल चौ० चरण सिंह खेमे का समर्थन प्राप्त था जबकि चौ० देवीलाल के समर्थकों ने चुनाव प्रचार में उसकी किसी भी तरह से सहायता नहीं की। इतना सब होने के बावजूद भाजपा एवं लोकदल के गठबन्धन द्वारा उतारे गए उम्मीदवारों में सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव लड़ा। इस चुनाव में जातिगत संख्या व आँकड़ों पर अत्यधिक ध्यान दिया गया। यह चुनाव विशेष तौर पर जाति पर आधारित चुनाव था। उदाहरण के लिए देवीलाल की पार्टी लोकदल मुख्यतः जाट मतदाताओं पर ध्यान दे रही थी। काँग्रेस पार्टी का मुख्य जोर अनुसूचित जातियों के साथ–साथ दूसरी सभी ग़ैर–जाट जातियों की ओर था। जबकि भाजपा का रुझान पंजाबी मतदाताओं की ओर था क्योंकि किसी अन्य दल ने 27.5 प्रतिशत आबादी वाले इस समुदाय पर गौर नहीं किया था।[3]

इस चुनाव में किसी भी दल ने मुख्य रूप से किसी भी मुद्दे को चुनावी मुद्दा नहीं बनाया अर्थात् यह एक मुद्दों के बिना लड़ा गया चुनाव था। इस चुनाव में जातिगत मुद्दे इतने हावी थे कि हरियाणा की मुख्य मांग एस. वाई.एल. नहर भी मुद्दा नहीं बन सकी। जबकि काँग्रेस की प्रमुख नेत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी ने नहर खोदने का शुभारम्भ अपने हाथों से किया था।[4] इस चुनाव में जातिगत प्रभाव इतने ज्यादा थे कि सभी पार्टियों ने क्षेत्र विशेष में जातिगत आँकड़ों के आधार पर उम्मीदवार तय किए। इसका सबसे पुख्ता उदाहरण नीलोखेड़ी विधानसभा क्षेत्र में देखने को मिला चूँकि नीलोखेड़ी विधानसभा क्षेत्र में सबसे प्रभावशाली व सबसे ज्यादा मतदाताओं की संख्या वाली जाति *'रोड़'* है। अतः इस क्षेत्र में सभी पार्टियों की ओर से तय किए गए उम्मीदवार *'रोड़'* जाति से ही संबंध रखते थे। इस चुनाव में बाबू जगजीवन राम से आकर्षित एवं प्रभावित होकर चमार जातियों के अधिकतर मतदाताओं ने काँग्रेस के पक्ष में मतदान किया। वाल्मिकियों ने भी काँग्रेस के पक्ष में मतदान किया। धानक जाति के मतदाताओं ने लोकदल के पक्ष में मतदान किया था।

इस चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या लगभग 71.5 लाख थी। इसमें सबसे ज्यादा 18 लाख मतदाता जाट समुदाय से थे। इसके बाद 14 लाख मतदाता अनुसूचित जातियों से संबंध रखते थे। पिछड़ी जातियों के मतदाताओं की जनसंख्या 9 लाख, ब्राह्मण मतदाताओं की संख्या 5 लाख, वैश्य मतदाता 4 लाख, क्षत्रीय मतदाता 3 लाख, यादव मतदाता 3 लाख, मुस्लिम मतदाता लगभग 2.5 लाख, सिक्ख व अन्य (गुर्जर, रोड, सुनार, बिश्नोई, त्यागी, कम्बोज) मतदाताओं की संख्या 12 लाख थी। इसके अतिरिक्त लगभग 1.5 लाख मतदाता अन्य जातियों से संबंध रखते थे।

इस चुनाव में कुल 69.89 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।[5]

1987 के चुनाव भाजपा का अन्य दलों के साथ गठबन्धन

सन् 1987 के चुनाव में भाजपा का गठबन्धन चौ० देवीलाल की अध्यक्षता वाले दल लोकदल के साथ बना रहा। इन दोनों दलों का गठबन्धन सन् 1982 के चुनाव में बनने के बाद लगातार सन् 1987 के चुनाव में भी बना रहा। इन दोनों दलों में निरन्तर जारी गठबन्धन के फलस्वरूप 11 मई 1987 को लोकदल प्रमुख देवीलाल और भाजपा उपाध्यक्ष श्रीमति विजया राजे सिंधिया में सीट बँटवारे अर्थात् सीट संख्याओं के निर्धारण पर सहमति बनी। इस सहमति के अनुसार मीटिंग में तय हुआ कि भाजपा कुल 18 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े करेगी।

इस चुनाव में जनता पार्टी एक तीसरा मोर्चा बनाने के प्रयास में थी। इस कोशिश को अमलीजामा पहनाने के लिए जनता पार्टी भी भाजपा व लोकदल में बने हुए गठबन्धन में शामिल होना चाहती थी बशर्ते 40 विधानसभा सीटों पर उसके उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने के लिए गठबन्धन द्वारा स्वीकार किया जाए। जनता पार्टी के इस सुझाव से चौ० देवीलाल सहमत नहीं थे। वे किसी भी कीमत पर जनता पार्टी को इतनी सीटें देने के पक्ष में नहीं थे। अंततः लगातार विचार–विमर्श के बाद तय किया गया कि जनता पार्टी कुल 7 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। चुनाव में भाजपा के परम्परागत सहयोगी दल अकाली दल ने जनता पार्टी और बहुजन समाजवादी पार्टी की ओर से तय किए गए विधानसभा उम्मीदवारों को समर्थन एवं सहयोग दिया। इस प्रकार सन् 1987 के चुनाव में भाजपा का गठबन्धन लोकदल व जनता पार्टी के साथ था।

इस चुनाव में एस.वाई.एल. नहर एक मुख्य मुद्दा था, जिस पर सभी दल भरपूर ध्यान दे रहे थे। अब इस मुद्दे को गंभीरता से समझते हुए व अपने पक्ष में भुनाने के लिए सभी दल हर संभव प्रयास कर रहे थे। इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बंसीलाल ने 6 हजार से ज्यादा लोगों को इकट्ठा किया और सबको एस.वाई.एल. नहर के वास्तविक निर्माण स्थल पंजाब में ले कर गए ताकि आम आदमी को विश्वास दिलाया जा सके कि वर्तमान सरकार एस.वाई.एल. नहर के निर्माण के लिए गंभीर है और नहर के निर्माण कार्य के लिए सिर्फ बयानबाजी नहीं की जा रही है। बल्कि यह कार्य निरंतर जारी है। इस मुद्दे को भुनाने के लिए लोकदल के प्रमुख चौ० देवीलाल भी अपनी तरफ से पूरा जोर लगाए हुए थे। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बंसीलाल द्वारा 6 हजार लोगों को एस.वाई.एल. नहर के निर्माण स्थल पर ले जाने के प्रत्युत्तर में लोकदल प्रमुख चौ० देवीलाल ने समस्त हरियाणा के सरपंच, पंच व ब्लॉक समिति के सदस्यों में से 5000 से अधिक जन प्रतिनिधियों को इकट्ठा किया और निर्माण कार्य के वास्तविक निरीक्षण विकास कार्य में तेजी लाने के उद्देश्य के लिए उन

सभी सदस्यों को एस.वाई.एल. नहर के वास्तविक निर्माण स्थल पर लेकर गए और निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता की। इस प्रकार एस.वाई.एल. नहर का निर्माण सन् 1987 के चुनाव में एक ज्वलंत मुद्दा था।[6]

इन चुनावों की तैयारी के लिए बंसीलाल सरकार ने मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए अनेक लोकलुभावन घोषणाएं की थी। सरकार ने लगभग हर वर्ग के लिए घोषणाएं की। सरकार ने दक्षिण हरियाणा को सूखा क्षेत्र घोषित किया। किसानों व अन्य वर्गों के लिए कई प्रकार की छूट देने की घोषणा की।

सरकारी कर्मचारियों को स्वास्थ्य संबंधी खर्चों की अदायगी करने की घोषणा की। किसानों के लिए सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने और उर्वरकों के दाम कम करने की घोषणा की। भूमिहीन मज़दूरों के लिए बिना किसी गारंटी 20,000 रुपये तक के ऋण देने की घोषणा की। अनुसूचित जातियों के लिए चौपाल बनाने के लिए ग्रांट जारी की गई। समाज के निचले तबके को दी जाने वाली ब्याजमुक्त ऋण राशि को 2000 से बढ़ाकर 10,000 रुपये किया। बिजली आपूर्ति को बढ़ा दिया गया और सभी आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। हरियाणा प्रदेश के लिए पृथक राजधानी बनाने के उद्देश्य हेतु जमीन चिन्हित की गई।[7]

सन् 1991 के चुनाव में भाजपा के गठबन्धन सहयोगी दल

सन् 1991 का चुनाव भारी उठा–पटक वाला साबित हुआ। इस चुनाव में आयाराम–गयाराम की प्रवृत्ति व्यापक रूप से देखने को मिली। काँग्रेस ने बंसीलाल को पार्टी से निकाल दिया, जिसके कारण बंसीलाल ने हरियाणा विकास पार्टी अर्थात् ह.वि.पा. का गठन किया।

1989 में लोकदल प्रमुख चौ० देवीलाल ने उप–प्रधानमंत्री बनने के लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री पद से त्याग–पत्रदेकर अपने पुत्र श्री ओमप्रकाश चौटाला को मुख्यमंत्री की कुर्सी सौंप दी, जिसके बाद अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाएं हुई एवं श्री चौटाला बार–बार मुख्यमंत्री बने व हटे। इस दौरान महम कांड भी हुआ। इस दौरान श्री चौटाला का व्यवहार तानाशाही पूर्ण था। अतः भाजपा ने श्री चौटाला को तानाशाही करार देते हुए लोकदल का साथ छोड़ दिया। चुनाव के दौरान ह.वि.पा. प्रमुख श्री बंसीलाल ने भाजपा के साथ गठबन्धन करने की कोशिशकी लेकिन इन दोनों के बीच गठबन्धन संभव न हो सका।

चुनाव से पहले भाजपा की चुनाव समिति के सदस्य श्री रामबिलास शर्मा ने घोषणा करते हुए कहा कि भाजपा व लोकदल के बीच किसी भी कीमत पर गठबंधन संभव नहीं है क्योंकि श्री ओमप्रकाश चौटाला के तानाशाही पूर्ण रवैये के कारण दो वर्ष पूर्व ही हमारा गठबंधन टूट चुका है।

सन् 1991 के चुनाव में भाजपा ने किसी भी दल के साथ गठबंधन नहीं किया और इस चुनाव में किसी भी दल को अपना सहयोगी नहीं बनाया और अपने दम पर चुनाव लड़ने का निश्चय लिया।[8]

इस चुनाव में भाजपा ने राममंदिर व रथयात्रा को मुद्दा बनाया जो कि कामयाब नहीं हो सका। इसके अतिरिक्त मंडल आयोग को भी मुद्दा बनाया गया।

1996 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के साथ गठबन्धन में सहयोगी दल

सन् 1996 में हुए हरियाणा विधानसभा चुनाव में विजय प्राप्ति के लिए लगभग सभी दलों ने आपस में विलय और गठबन्धन करने की राजनीति को सबसे ज्यादा अपनाया। अन्य शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हरियाणा में सन् 1996 का विधानसभा चुनाव विभिन्न दलों के विलय और गठबन्धन का चुनाव था। चुनाव से पूर्व विभिन्न दलों में गठबन्धन के लिए बहुत तेजी से अनेक राजनैतिक घटनाएं घटी जिनके कारण दिन–प्रतिदिन नए–नए राजनीतिक समीकरण बनते रहे और अगले दिनों में बदलते रहे। इस चुनाव में भाजपा ने बंसीलाल के नेतृत्व वाली *'हरियाण विकास पार्टी'* के साथ गठबन्धन किया, लेकिन यह गठबन्धन बनने से पूर्व भी अनेक घटनाएं सामने आईं।

1996 के चुनाव में चंद्रशेखर की अध्यक्षता वाली समाजवादी जनता पार्टी ने सबसे पहले भाजपा के साथ गठबंधन बनाने की पुरजोर कोशिशकी, लेकिन भाजपा उनके प्रति लगातार उदासीन व्यवहार करती रही। जिसके कारण समाजवादी जनता पार्टी ने मजबूर होकर अंबाला में कई क्षेत्रों में अच्छा प्रभाव रखने वाली बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन कर लिया। इस गठबंधन के साथ–साथ नया गठबंधन भी बना जिसकी अंगुवाई मुख्यतः वामदलों द्वारा की जा रही थी। इस गठबंधन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), जनता दल और समाजवादी पार्टी सहयोगियों के रूप में शामिल थीं।

भाजपा विधानसभा के लिए 30 सीटें और लोकसभा के लिए 6 सीटें मांग रही थी। जबकि समाजवादी जनता पार्टी भाजपा को 18 विधानसभा व 3 लोकसभा सीटें देना चाहती थी। इस गठबंधन को सरकार बनाने के लिए भोंडसी गाँव में स्थित चंद्रशेखर के फार्म हाऊस पर भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री गोविन्दाचार्य व राजस्थान में भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री भैरो सिंह शेखावत और चंद्रशेखर के बीच लम्बी चर्चा हुई।[9] श्री ओमप्रकाश चौटाला व श्री अटल बिहारी वाजपेयी के बीच भी गठबंधन के संबंध में लंबी बातचीत हुई। इन दोनों की वार्ता श्री वाजपेयी जी के निवास स्थान पर हुई। इस गठबंधन के पक्ष में मुरल मनोहर जोशी व सिकंदर बख्त से सहयोग पाकर भैरो सिंह शेखावत जबरदस्त लॉबिंग कर रहे थे। इस प्रकार भाजपा ने समाजवादी जनता पार्टी के साथ चुनाव लड़ने पर सहमति जताई। लेकिन दोनों के बीच बने गठबंधन के लिए औपचारिक घोषणा नहीं की गई। इस घोषणा में विलंब होने के कारण श्री चौटाला ने रोहतक में प्रस्तावित पार्टी की रैली को स्थगित कर दिया और निर्धारित किया कि पार्टी की रैली कुछ दिन बाद आयोजित की जाएगी ताकि उनका गठबंधन सहयोगी दल भाजपा की रैली में भाग ले सके। लेकिन इतना सब कुछ तय होने के बावजूद भी चंद्रशेखर द्वारा निर्धारित की गई सीटों की संख्या के कारण दोनों दलों में गठबंधन नहीं हो पाया। जिसके कारण भाजपा प्रवक्ता श्रीमति सुषमा स्वराज ने समाजवादी जनता पार्टी की बजाय श्री बंसीलाल के नेतृत्व वाली हरियाणा विकास पार्टी के साथ गठबंधन करने की घोषणा कर दी क्योंकि हरियाणा विकास पार्टी के मुखिया द्वारा भाजपा को 25 विधानसभा व 6 लोकसभा सीटें देने की पेशकश की जा रही थी। यह अवसर भाजपा की रणनीति के अनुकूल था क्योंकि भाजपा का मुख्य लक्ष्य लोकसभा की सीटों को बढ़ाना था। पंजाब में भाजपा के सहयोगी अकाली दल प्रमुख श्री प्रकाश सिंह बादल ने इस समझौते को तोड़ने और श्री चौटाला के साथ गठबंधन करने के लिए भाजपा पर दबाव डाला लेकिन भाजपा का प्रदेश नेतृत्व श्री चौटाला के साथ गठबंधन करने के पक्ष में नहीं था क्योंकि भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश जोशी को हरियाणा विकास पार्टी के साथ गठबंधन करने के लिए निर्देश दिए गए थे। इस प्रकार भाजपा व हरियाणा विकास पार्टी के बीच चुनाव गठबंधन तय हो गया। बशर्ते बंसीलाल के पुत्र सुरेन्द्र सिंह राजनीतिक मुद्दों में दखलअंदाजी नहीं करेंगे। चुनाव से पूर्व बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी का किसी भी प्रकार का ढांचा तैयार नहीं हो पाया था। अतः इस अभाव को पूरा करने में भाजपा से सहयोग की अपेक्षा करते हुए श्री बंसीलाल ने गठबंधन किया। श्री बंसीलाल ने इस गठबंधन को चुनावी अवसर की बजाय विचारों का मिलन बताया। ओमप्रकाश चौटाला ने इस गठबंधन को दोनों दलों के लिए आत्मघाती बताया। काँग्रेस नेता श्री भजनलाल ने इस गठबंधन को अवसरवादी गठबंधन बताया।[10]

इस गठबंधन में सीटों की संख्या के निर्धारण से भाजपा नेता संतुष्ट थे लेकिन विधानसभा क्षेत्रों के निर्धारण से भाजपा नेता अत्यधिक नाराज थे। इस कारण भाजपा की हिसार, कैथल, अंबाला, रोहतक, भिवानी जिला इकाईयों ने खुलकर गठबंधन का विरोध किया और तय किया कि भाजपा जिला इकाईयाँ हरियाणा विकास पार्टी उम्मीदवारों का समर्थन नहीं करेंगी बल्कि उनके विरोध में अपने उम्मीदवार खड़े करेंगी।

इस गठबंधन का सबसे अधिक विरोध रोहतक में किया गया। जहाँ जिले के सभी भाजपा कार्यकर्ताओं, भाजपा युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं व भाजपा महिला मोर्चा के सभी कार्यकर्ताओं ने भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश जोशी, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष श्री सीताराम सिंगला, महासचिव श्री मनोहर लाल खट्टर और भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष प्रदीप जैन को ज्ञापन देकर गठबंधन उम्मीदवार श्री किशनदास के खिलाफ विरोध दर्ज करवाया और रोहतक विधानसभा क्षेत्र को हरियाणा विकास पार्टी को देने की बजाय भाजपा को देने की मांग की। इसी प्रकार भिवानी, कैथल, पूण्डरी, सोनीपत और अंबाला में भी जोरदार हंगामा हुआ।

इसके अतिरिक्त अंबाला जिले में भाजपा उम्मीदवार श्री के०डी० शर्मा का भी खूब विरोध हुआ। उनके नामांकन के दौरान भी खिलाफत की गई क्योंकि वे भाजपा के प्राथमिक सदस्य भी नहीं थे।[11]

सन् 2000 के चुनाव में भाजपा का गठबन्धन

सन् 2000 के विधानसभा चुनाव से पूर्व 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को लगभग 30 प्रतिशत मत प्राप्त हुए थे। मतों की यह संख्या बहुत महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय थी। अतः लोकसभा चुनाव के बाद भाजपा नेतृत्व खूब जोश मे था। चुनाव से पूर्व भाजपा व श्री ओमप्रकाश चौटाला के नेतृत्व वाले दल इनेलो में गठबंधन

करने के लिए बातचीत हुई। चुनाव में भाजपा द्वारा 35 सीटों की मांग की गई जबकि इनेलो द्वारा सिर्फ 25 सीट देने की शर्त रखी गई।

गठबंधन को साकार करने के लिए इनेलो प्रमुख श्री ओमप्रकाश चौटाला ने प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से भी मुलाकात की और भाजपा के हरियाणा प्रदेश नेतृत्व के दृष्टिकोण को नकारात्मक बताते हुए नाराजगी जाहिर की और गठबंधन के हित में कोई रास्ता निकालने की गुजारिश की। इसके फलस्वरूप हरियाणा भवन दिल्ली में भाजपा को 28 सीटें व इनेलो को 58 सीटों देने पर सहमति बनी। इस गठबंधन में एक तीसरा सहयोगी अकाली दल था जिसको 4 सीटें मिलीं। अकाली दल के उम्मीदवार के लिए तय किया गया कि उनके दो उम्मीदवार भाजपा के चुनाव चिन्ह का प्रयोग करके चुनाव लड़ेंगे। प्रदेश भाजपा नेतृत्व सीटों के बँटवारे से इस कदर असंतुष्ट था कि उन्होंने इनेलो के साथ गठबंधन को तोड़कर बसपा के साथ गठबंधन करने की कोशिश भी की।

दोनों गठबंधन सहयोगियों में सीटों के बँटवारे की मुख्य दुविधा इस बात को लेकर थी कि सीटों की संख्या किसी अनुपात के अनुसार देने की बजाय जीतने योग्य उम्मीदवारों के अनुसार होनी चाहिए। इस मुद्दे पर दोनों दलों के बीच कई दौर की बातचीत हुई। कुछ सीटों पर दोनों दलों के उम्मीदवार अपनी–अपनी ओर से दावा ठोक रहे थे। जैसे गुड़गाँव विधानसभा सीट पर भाजपा के श्री सीताराम सिंगला और इनेलो से गोपीचन्द गहलोत दोनों ही दावा कर रहे थे और कोई भी पीछे हटने के लिए तैयार नहीं था। इसी प्रकार पलवल में भाजपा के उम्मीदवार कर्ण सिंह दलाल और इनेलो के सुभाष कत्याल सीट प्राप्त करने के लिए अड़े हुए थे।

2005 के चुनाव में भाजपा का गठबन्धन

सन् 2005 का विधानसभा चुनाव 3 फरवरी 2005 को हुआ। इस चुनाव से पूर्व हरियाणा में भाजपा का गठबंधन इनेलो के साथ था। दोनों दलों की गठबंधन की सरकार ने अपना कार्यकाल पूरा किया लेकिन इसी दौरान दोनों के संबंध बिगड़ते चले गए व आपस में आरोप–प्रत्यारोप लगाने का सिलसिला भी लगातार जारी रहा। भाजपा के गठबंधन सहयोगी इनेलो ने किसानों के बिजली के बिल माफ करने के जो वायदे किए थे वो पूरे नहीं किए गए तथा किसानों द्वारा आंदोलन करने पर कण्डेला गांव में किसानों पर गोलियाँ भी चलवाई गई। जिसमें कई किसानों की मृत्यु हुई। इस कण्डेला काण्ड के बाद हरियाणा का किसान वर्ग इनेलो से दूर हो गया। इसके अतिरिक्त इनेलो प्रमुख का व्यवहार सहयोगी भाजपा के प्रति सदैव उपेक्षापूर्ण बना रहा जिसके कारण भाजपा की प्रदेश इकाई बहुत नाराज थी और उन्होंने गठबंधन से अलग होने का फैसला लिया। भाजपा का यह फैसला 2005 के विधानसभा चुनाव में भी नहीं बदला।

इनेलो ने 2005 के चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन दोबारा करने के लिए शीर्ष स्तर पर कई दौर की बातचीत की लेकिन भाजपा की हरियाणा प्रदेश इकाई ने गठबंधन करने से साफ मना कर दिया और **भाजपा ने पहली बार हरियाणा में किसी भी दल के साथ गठबंधन करने की बजाय अकेले चुनाव लड़ने का फैसला लिया।**इस चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा और वह 90 सीटों पर चुनाव लड़ने के बावजूद 2 सीटों पर ही जीत हासिल कर पाई।[12]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि आज भाजपा ने प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई लेकिन वर्ष 2014 से पूर्व भाजपा ने प्रदेश में अन्य दलों के सहयोगी दल (गठबन्धन) के रूप में प्रदेश की राजनीति में और प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज भले ही भाजपा पूर्ण बहुमत में शासक दल है लेकिन अन्य दलों के साथ उनके गठबन्धनों के तहत लिए गए पूर्व निर्णय एवं किये गए कार्य प्रदेश की राजनीति में सदैव याद रहेगे।

सन्दर्भ सूची

1 hi.m.wikipedia.org/wiki/%Eo%

[2] Chahar S.S Dynamics of Electoral Politics in Haryana, Vol-II, Sanjay Parkashan, New Delhi 2004, pg.no 62-63

[3] Chahar S.S Dynamics of Electoral Politics in Haryana, Vol-II, Sanjay Parkashan, New Delhi 2004, Pg. No 57

[4] पूर्वोक्त चाहर, पृ० सं० 64

[5] Chahar S.S Dynamics of Electoral Politics in Haryana, Vol-II, Sanjay Parkashan, New Delhi 2004, pg.no 69

[6] साक्षात्कार जगदीश कुमार सैनी, राजनैतिक सचिव, डॉ० मंगल सेन 1985–1990, वर्तमान में प्रदेश संयोजक बूथ संकलन, हरियाणा भाजपा, प्रदेश कार्यालय भाजपा, रोहतक

[7] पूर्वोक्त चाहर, एस.एस. पृ० सं० 115

[8] साक्षात्कार श्री रामबिलास शर्मा, शिक्षा मंत्री हरियाणा सरकार

[9] पूर्वोक्त चाहर, एस.एस. पृ० सं० 242

[10] पूर्वोक्त चाहर, एस.एस. पृ० सं० 244

[11] पूर्वोक्त चाहर एस.एस. पृ० सं० 245

[12] साक्षात्कार जगदीश कुमार सैनी, राजनैतिक सचिव, डॉ० मंगल सेन 1985–1990, वर्तमान में प्रदेश संयोजक बूथ संकलन, हरियाणा भाजपा, प्रदेश कार्यालय भाजपा, रोहतक

सोनिका
शोधार्थी , राजनीतिक विज्ञान शास्त्र, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक.